SYLLABUS

SANSKRIT

इकाई-1

(क-: साहित्य का सामान्य परिचय-वैदिक (

- वेदों का काल मैक्समूलर :, एवेबर ., जैकोबी, बालगंगाधर तिलक, एमविन्टरनिट्.त्ज, भारतीय परम्परागत विचार
- संहिता साहित्य
- संवाद सूक्त उर्वशी - पुरुरवा :, यम यमी, सरमापणि-, विश्वामित्र नदी
- ब्राह्मण साहित्य
- आरण्यक साहित्य
- वेदांग शिक्षा :, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष

इकाई-II

(ख-: वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन (

1. निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन -:

- ऋग्वेदः - अग्नि)1.1), वरुण)1.25), सूर्य)1.125), इन्द्र)2.12), उषस्)3.61), पर्जन्य)5.83), अक्ष)10.34), ज्ञान)10.71), पुरुष)10.90), हिरण्यगर्भ)10.121), वाक्)10.125), नासदीय)10.129)
- शुक्लयजुर्वेदशिवसंकल्प - :, अध्याय -34 (1-6), प्रजापति, अध्याय -23 (1-5)
- अथर्ववेदः - राष्ट्राभिवर्धनम्)1.29), काल)10.53), पृथिवी)12.1)

2. ब्राह्मणप्रतिपाद्य विषय : साहित्य-, विधि एवं उसके प्रकार, अग्निहोत्र, अग्निष्टोम, दर्शपूर्णमास यज्ञ, पंचमहायज्ञ, , आख्यान शुनःशेप), वाङ्मनस्।(

3. उपनिषद्ईश : निम्नलिखित उपनिषदों की विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन : साहित्य-, कठ, केन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर ।

4. वैदिक व्याकरण, निरुक्त एवं वैदिक व्याख्या पद्धति :

- ऋक्प्रातिशाख्य निम्नलिखित परिभाषाएँ :

समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य, रिफित ।

- निरुक्त अध्याय)1 तथा 2)

  चार पद नाम विचार, आख्यात विचार, उपसर्गों का अर्थ, निपात की कोटियाँ,

- निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन
- निर्वचन के सिद्धान्त
- निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति :

  आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक्, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु ।

- निरुक्त अध्याय)7 दैवत काण्ड(
- वैदिक स्वर उदात्त :, अनुदात्त तथा स्वरित।
- वैदिक व्याख्या पद्धति प्राचीन एवं अर्वाचीन :
- इकाई -III

  दर्शन साहित्य -

  (क प्रमुख भारतीय (दर्शनों का सामान्य परिचय :

  प्रमाणमीमांसा, तत्त्वमीमांसा, आचारमीमांसा

  (चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्याय, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा के संदर्भ में(

  इकाई-IV

  (ख: साहित्य का विशिष्ट अध्ययन - दर्शन (

  ईश्वरकृष्ण; सांख्यकारिका सत्कार्यवाद -, पुरुषस्वरूप, प्रकृतिस्वरूप, सृष्टिक्रम, प्रत्ययसर्ग, कैवल्य।

- सदानन्द; वेदान्तसार चतुष्ट्य-अनुबन्ध :, अज्ञान, अध्यारोपअपवाद -, लिंगशरीरोत्पात्ति, पंचीकरण, विवर्त, महावाक्य, जीवन्मुक्ति।
- अन्नंभट्ट; तर्कसंग्रहकेशव मिश्र /; तर्कभाषा : पदार्थ, कारण, प्रमाण प्रत्यक्ष), अनुमान, उपमान, शब्द(, प्रामाण्यवाद, प्रमेय।

1. लौगाक्षिभास्कर; अर्थसंग्रह
2. पतंजलि; योगसूत्र, - (व्यासभाष्यचित्तभूमि : (, चित्तवृत्तियाँ, ईश्वर का स्वरूप, योगाङ्ग, समाधि, कैवल्य।
3. बादरायण; ब्रह्मसूत्र 1.1 (शांकरभाष्य (
4. विश्वनाथपंचानन; न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)
5. सर्वदर्शनसंग्रह; जैनमत, बौद्धमत

इकाई-V

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

(क- निम्नलिखित आचार्यों का परिचय : सामान्य परिचय (

- पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि, भर्तृहरि, वामनजयादित्य, भट्टोजिदीक्षित, नागेशभट्ट, जैनेन्द्र, कैय्यट, शाकटायन, हेमचन्द्रसूरि, सारस्वतव्याकरणकार।
- पाणिनीय शिक्षा
- भाषाविज्ञान : भाषा की परिभाषा, भाषा का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक), ध्वनियों का वर्गीकरण स्पर्श :, संघर्षी, अर्धस्वर, स्वर (संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में), मानवीय ध्वनियंत्र, ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि नियम ग्रिम), ग्रासमान, वर्नर(
- अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण, वाक्य का लक्षण व भेद, भारोपीय परिवार का सामान्य परिचय, वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर, भाषा तथा वाक् में भाषा तथा बोली में अन्तर ।

इकाई-VI

(ख व्याकरण का (विशिष्ट अध्ययन :

- परिभाषाएँ संहिता -, संयोग, गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, नदी, घि, उपधा, अपृक्त, गति, पद, विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्य, सर्वनामस्थान, भ, सर्वनाम, निष्ठा।
- सन्धि - अच् सन्धि, हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- सुबन्त - अजन्त -राम, सर्व (तीनों लिंगों में), विश्वपा, हरि, त्रि (तीनों लिंगों में), सखि, सुधी, गुरु, पितृ, गौ, रमा, मति, नदी, धेनु, मातृ, ज्ञान, वारि, मधु।
- हलन्त - लिहू, विश्ववाह, चतुर् (तीनों लिंगों में), इदम् (तीनों लिंगों में), किम्(तीनों लिंगों में), तत् तीनों)लिंगों में(, राजन्, मघवन्, पथिन्, विद्वस्, अस्मद्, युष्मद्।
- समास - अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्वन्द्व, (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार(
- तद्धित - अपत्यार्थक एवं मत्वर्थीय (सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- तिङन्त - भू, एध्, अद्, अस्, हु, दिव्, षुञ्, तुद्, तन्, कृ, रुध्, क्रीञ्, चुर् ।
- प्रत्ययान्त - णिजन्त; सन्नन्त; यङन्त; यङ्लुगन्त; नामधातु।

- कृदन्त - तव्य तव्यत् /; अनीयर्; यत्; ण्यत्; क्यप्; शतृ; शानच्; क्त्वा; क्त; क्तवतु; तुमुन्; णमुल्।
- स्त्रीप्रत्यय - लघुसिद्धान्त कौमुदी के अनुसार
- कारक प्रकरण -सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- परस्मैपद एवं आत्मनेपद विधान सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार -
- महाभाष्य - (पस्पशाह्निक) शब्दपरिभाषा, शब्द एवं अर्थ संबंध, व्याकरण अध्ययन के उद्देश्य, व्याकरण की परिभाषा, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम, व्याकरण पद्धति ।
- वाक्यपदीयम् - (ब्रह्मकाण्ड) स्फोट का स्वरूप, शब्दब्रह्म का स्वरूप-, शब्दब्रह्म की शक्तियाँ -, स्फोट एवं ध्वनि का संबंध, शब्दअर्थ संबंध -, ध्वनि के प्रकार, भाषा के स्तर।

इकाई-VII

संस्कृतसाहित्य-, काव्यशास्त्र एवं छन्दपरिचय :

(क: निम्नलिखित का सामान्य परिचय (

- भास, अश्वघोष, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, भारवि, माघ, हर्ष, बाणभट्ट, दण्डी, भवभूति, भट्टनारायण, बिल्हण, श्रीहर्ष, अम्बिकादत्तव्यास, पंडिता क्षमाराव, वी .राघवन्, श्रीधरभास्कर वर्णेकर ।
- काव्यशास्त्र रससम्प्रदाय :, अलंकारसम्प्रदाय, रीतिसम्प्रदाय, ध्वनिसम्प्रदाय, वक्रोक्तिसम्प्रदाय, औचित्यसम्प्रदाय।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र अरस्तू :, लॉन्जाइनस, क्रोचे ।

इकाई-VIII

(ख: निम्नलिखित का विशिष्ट अध्ययन (

- पद्य (प्रथमसर्ग) रघुवंशम् (प्रथम) बुद्धचरितम् :, किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग), शिशुपालवधम्, (प्रथमसर्ग(, नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)
- नाट्य स्वप्नवासवदत्तम् :, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम्, मुद्राराक्षसम्, उत्तररामचरितम्, रत्नावली, मृच्छकटिकम्।
- गद्य (उच्छवास-अष्टम) दशकुमारचरितम् :, हर्षचरितम् (उच्छवास-पञ्चम), कादम्बरी (शुकनासोपदेश(
- चम्पूकाव्य (उच्छवास - प्रथम) :नलचम्पू :
- साहित्यदर्पण :- काव्यपरिभाषा, काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन, शब्दशक्ति संकेतग्रह) -, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना(, काव्यभेद गद्य) श्रव्यकाव्य (चतुर्थ परिच्छेद), पद्य, मिश्र काव्य(लक्षण-

- काव्यप्रकाश :- काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यभेद, शब्दशक्ति, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, रसस्वरूप एवं रससूत्र विमर्श, रसदोष, काव्यगुण, व्यंजनावृत्ति की स्थापना (पञ्चम उल्लास)
- अंलकार :- वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अपह्नुति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विभावना, विशेषोक्ति, स्वभावोक्ति, विरोधाभास, सकंर, संसृष्टि।
- ध्वन्यालोकः (प्रथम उद्योत)
- वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष)
- भरत(द्वितीय एवं षष्ठ अध्याय) नाट्यशास्त्रम्-
- दशरूपकम् (प्रथम तथा तृतीय प्रकाश)
- छन्द परिचय -

  आर्या, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका, उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, शालिनी, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्त्रग्धरा।

इकाई-IX

पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र एवं अभिलेखशास्त्र

(कनिम्नलिखित का सामान्य परिचयः (

- रामायण विषयवस्तु -, काल, रामायणकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्त्रोत, साहित्यिक महत्त्व, रामायण में आख्यान
- महाभारत विषयवस्तु -, काल महाभारतकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्त्रोत, साहित्यिक महत्त्व, महाभारत में आख्यान।
- पुराण पुराण की परिभाषा -, महापुराण उपपुराण -, पौराणिक सृष्टिविज्ञान-, पौराणिक आख्यान।
- प्रमुख स्मृतियों का सामान्य परिचय।
- अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय।
- लिपि ब्राह्मी लिपि का इतिहास एवं उत्पत्ति के सिद्धान्त। :
- अभिलेख का सामान्य परिचय

इकाई X

(ख) निम्नलिखित ग्रन्थों का विशिष्ट अध्ययन

- कौटिलीय(विनयाधिकारिक - प्रथम) अर्थशास्त्रम्-
- मनुस्मृतिः प्रथम) -, द्वितीय तथा सप्तम अध्याय(
- याज्ञवल्क्यस्मृति :(व्यवहाराध्याय) -
- लिपि तथा अभिलेख
    - गुप्तकालीन तथा अशोककालीन ब्राह्मी लिपि ।
    - अशोक के अभिलेख प्रमुख शिलालेख -, प्रमुख स्तम्भलेख
    - मौर्योत्तरकालीन अभिलेख कनिष्क के शासन वर्ष -3 का सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख, रुद्रदामन् का गिरनार शिलालेख, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
    - गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तरकालीन अभिलेख समुद्रगुप्त का इलाहाबाद - स्तम्भलेख, यशोधर्मन् का मन्दसौर शिलालेख, हर्ष का बांसखेड़ा ताम्रपट्ट अभिलेख, पुलकेशिन् द्वितीय का ऐहोल शिलालेख